गद्य खंड

बड़े भाई साहब *(प्रेमचंद)*

पाठ का सार

बड़े भाई साहब का व्यक्तित्व

कहानी में लेखक ने अपने बड़े भाई साहब को चौदह वर्ष का बताया है। आयु में पाँच वर्ष का अंतर होने पर भी वे लेखक से कक्षा में केवल तीन दरजा आगे हैं, क्योंकि वह शिक्षा पाने में किसी प्रकार की जल्दबाज़ी नहीं करना चाहते। वह लेखक की हर हरकत पर निगाह रखते थे और किसी भी गलती पर लेखक को खूब डाँटते थे।

बड़े भाई साहब के निर्देश व नसीहतें

लेखक खेलकूद में बहुत रुचि लेता था और अवसर पाते ही होस्टल से बाहर निकलकर मैदान में अपने दोस्तों के साथ खेलने या गप्पे मारने लगता था। जब वह इन गतिविधियों से निपटकर अपने कमरे में वापस आता तो भाई साहब उससे प्रश्न पूछने को तैयार मिलते थे—कहाँ थे? यह प्रश्न सुनते ही लेखक काँप जाता था। इसके बाद बड़े भाई साहब के उपदेश चालू हो जाते थे। वह लेखक को इस बात के लिए लताड़ते (डाँटते) थे कि यदि उसे पढ़ने में रुचि नहीं है, तो वह क्यों यहाँ रहकर दादाजी की मेहनत की कमाई को बेकार कर रहा है?

बड़े भाई साहब से डाँट खाकर लेखक को बहुत दु:ख होता और वह निराश हो जाता। ऐसे में वह पढ़ाई करने की योजना के लिए टाइम-टेबिल बनाता। पहले ही दिन से उसका टाइम-टेबिल से ध्यान हट जाता और खेलकूद शुरू हो जाता। इसका परिणाम यह होता कि उसे भाई साहब की डाँट और नसीहतें सुननी पड़तीं।

वार्षिक परीक्षा और लेखक का परीक्षाफल

वार्षिक परीक्षा में लेखक कक्षा में प्रथम आया है, जबकि उसके बड़े भाई साहब फ़ेल हो गए। अगले दिन से उसने बड़े भाई साहब की डाँट की चिंता किए बिना खेलने जाना आरंभ कर दिया। बड़े भाई साहब ने लेखक की इस निडरता पर उसे खरी-खोटी सुनाते हुए कहा कि कक्षा में प्रथम आने से वह घमंडी हो गया है। उन्होंने रावण का उदाहरण देते हुए कहा कि घमंड करना बुरी आदत है, घमंड व्यक्ति का सर्वनाश कर देता है।

शिक्षा के नाम पर छात्रों पर होने वाले अत्याचार

बड़े भाई साहब ने उसे बताया कि उनकी कक्षा में आने पर उसे इंगलिस्तान का इतिहास तथा ज्योमेट्री जैसे विषय पढ़ने पड़ेंगे जो अत्यंत कठिन हैं। साथ ही वह 'समय की पाबंदी' पर चार पन्नों का निबंध लिखने का उदाहरण देकर परीक्षा लेने वालों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि बड़ी कक्षा की पढ़ाई आसान नहीं है और भले ही वह फ़ेल हो गए हों, किंतु वह अनुभव में लेखक से बड़े हैं और सदैव बड़े ही रहेंगे।

बड़े भाई साहब का पुनः फेल होना और लेखक का अव्वल आना

अगले वर्ष की परीक्षाएँ हुईं और लेखक फिर अपने दरजे में अव्वल आया तथा बड़े भाई साहब फिर फ़ेल हो गए। लेखक को अपने भाई के फ़ेल होने पर बहुत दु:ख हुआ और उन पर दया आई।

बड़े भाई साहब के व्यवहार में परिवर्तन

इस बार भी फ़ेल होने से बड़े भाई साहब बहुत दु:खी थे। अब उनके व्यवहार में लेखक के प्रति नरमी आ गई थी। उनको यह भी लगने लगा था कि अब उन्हें लेखक को डाँटने का अधिकार नहीं रहा। इसका फ़ायदा उठाते हुए लेखक ने खेलने में अधिक समय लगाना शुरू कर दिया।

एक दिन लेखक एक कटी हुई पतंग लूटने जा रहा था कि बड़े भाई साहब ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया और वहीं डाँटना शुरू कर दिया। यह मान लिया कि तुम होशियार हो और यह भी हो सकता है कि तुम कल मेरी कक्षा में आ जाओ या मेरे से भी आगे निकल जाओ। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं तुमसे कुछ नहीं कह सकता और तुम अपनी मनमानी करते रहोगे।

अनुभव का महत्त्व

बड़े भाई साहब ने लेखक को अनुभव का महत्त्व बताते हुए कहा कि हमारे दादा और अम्मा अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं, लेकिन यह उनका हक है कि वह हमें समझाएँ। उन्होंने कई स्थितियों का उदाहरण देकर बताया कि तजुर्बेकार व्यक्ति चाहे पढ़ा-लिखा न हो, फिर भी वह पढ़े-लिखे कम अनुभवी व्यक्ति से अधिक समझदार होता है।

लेखक की सहमति

लेखक बड़े भाई साहब की इस बात से पूरी तरह सहमत है कि बड़ा और अधिक अनुभवी होने के नाते बड़े भाई साहब को उससे अधिक समझ है। उसने बड़े भाई साहब से कहा कि आपको मुझसे यह सब कहने का पूरा अधिकार है। ऐसा सुनते ही बड़े भाई साहब ने लेखक को गले से लगा लिया और बोले कि मैं तुम्हें पतंग उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी दिल करता है कि मैं पतंग उड़ाऊँ, पर यदि मैं ही ऐसा करने लगा, तो तुम्हें किस प्रकार समझाऊँगा?

उसी समय एक कटी हुई पतंग ऊपर से गुज़री और बड़े भाई साहब ने लपककर उस कटी पतंग की डोर को पकड़ लिया और हॉस्टल की ओर दौड़े। लेखक भी अपने बड़े भाई के पीछे दौड़ रहा था।

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता–'क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिंदगी खराब करूँ।' मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था, लेकिन घंटे-दो-घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा।

चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ। टाइम-टेबिल में खेलकूद की मद बिलकुल उड़ जाती।

(क) 'मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगा।' कथन में 'मैं' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(i) भाई साहब के लिए
(ii) लेखक के साथी के लिए
(iii) स्वयं लेखक के लिए
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) भाई साहब के उपदेश सुनकर लेखक पर तत्काल क्या प्रभाव पड़ता था?

(i) वह खूब पढ़ाई करता था
(ii) उसकी हिम्मत टूट जाती थी
(iii) वह उनकी बातों को अनसुना कर देता था
(iv) वह आशा से भर जाता था

(ग) लेखक द्वारा आँसू बहाने का क्या कारण था?

(i) कक्षा में अनुत्तीर्ण होना
(ii) भाई की डाँट सुनना
(iii) भाई का उपदेश देना
(iv) भाई द्वारा घर वापस भेजना

(घ) भाई साहब द्वारा हर समय छोटे भाई को किस प्रकार के उपदेश दिए जाते थे?

(i) पढ़ाई करने के (ii) समय व्यर्थ न करने के
(iii) खेलकूद न करने के (iv) ये सभी

(ङ) निराशा के बादल हटने पर छोटे भाई द्वारा कौन-सा निश्चय किया गया था?

(i) अपने बूते से बाहर का काम नहीं करने का
(ii) अपना मूर्ख बना रहना मंजूर कर लेने का
(iii) आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करने का
(iv) अपने दादा के पास चले जाने का

2. मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबॉल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबॉल की वह तेजी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता।

वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साए से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नजर मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

(क) गद्यांश में किसकी अवहेलना की जाने की बात कही गई है?
(i) अध्यापक की (ii) शिक्षा प्रणाली की
(iii) बड़े भाई साहब की (iv) टाइम-टेबिल की

(ख) छोटे भाई द्वारा टाइम-टेबिल पर अमल क्यों नहीं किया जाता था?
(i) मस्ती और खेलों में अधिक रुचि होने के कारण
(ii) बड़े भाई की डाँट का भय समाप्त होने के कारण
(iii) पढ़ाई के प्रति अत्यधिक रुचि होने के कारण
(iv) स्वयं को मुक्त करने के कारण

(ग) लेखक बड़े भाई साहब की आँखों से दूर रहने का प्रयास किस कारण करता था?
(i) पढ़ाई करने और उपदेश सुनने से बचने के लिए
(ii) सदा खेलने और मस्ती करने के लिए
(iii) स्वच्छंद जीवन व्यतीत करने के लिए
(iv) भाई साहब के टाइम-टेबिल का पालन करने के लिए

(घ) बड़े भाई साहब को नसीहत देने का अवसर किस समय मिल जाता था?
(i) जब लेखक खेलकर आता था
(ii) जब लेखक पढ़ाई नहीं करता था
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) जब लेखक भाई साहब का कहना मानता था

(ङ) 'मौत और विपत्ति के बीच' से क्या आशय है?
(i) भयानक स्थिति
(ii) ऐसी स्थिति जिसमें बचने का कोई आसार नज़र न आता हो
(iii) ऐसी स्थिति जिसमें व्यक्ति दृढ़ निश्चयी बना रहे
(iv) ऐसी स्थिति जिसमें आत्मग्लानि का अनुभव हो

3. अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास ही हो जाऊँगा. पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा- बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कनने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज मेरी नज़रों में कम हो गया है।

(क) 'अब मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा' इस पंक्ति में किसे डाँटने का अधिकार नहीं रहा?
(i) छोटे भाई को
(ii) बड़े भाई साहब को
(iii) दादा को
(iv) अध्यापक को

(ख) बड़े भाई साहब के व्यवहार में लेखक को नरमी दिखाई देने का क्या कारण था?
(i) उनका अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना
(ii) उनका परीक्षा में फेल होना
(iii) छोटे भाई द्वारा उनसे बात करना बंद कर देना
(iv) उन्हें लगना कि वे जरूरत से ज्यादा डाँटते हैं

(ग) लेखक अपना सारा समय किस कार्य में व्यतीत करने लगा?
(i) पढ़ने में
(ii) क्रिकेट खेलने में
(iii) पतंगबाजी करने का
(iv) बड़े भाई की डाँट खाने में

(घ) बड़े भाई के डर से लेखक कौन-सा कार्य करने लगा था?
(i) और अधिक खेलता था
(ii) मित्रों से नहीं मिलता था
(iii) थोड़ा-बहुत पढ़ता था
(iv) नवीन योजना बनाता था

(ङ) लेखक बड़े भाई साहब को किस बात का संदेह नहीं होने देना चाहता है?
(i) उनका सम्मान लेखक की नज़रों में कम हो गया है
(ii) उनकी पढ़ाई की पुस्तकें उसने फाड़ दी हैं
(iii) उनकी शिकायत दादा से कर दी है
(iv) अनुभव के कारण उनकी बात को जानने का

4. एक दिन संध्या समय, होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की पूरी सेना लग्गे और झाड़दार बाँस लिए इनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाजार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाजारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो। आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का खयाल रखना चाहिए।

(क) संध्या समय होस्टल से दूर लेखक बेतहाशा क्यों दौड़ा जा रहा था?
(i) कनकौआ लूटने के लिए
(ii) बड़े भाई साहब की मार से बचने के लिए
(iii) अध्यापक से डरकर
(iv) भाई साहब रास्ते में न मिल जाएँ

(ख) 'आकाशगामी पथिक' से लेखक किसकी ओर इंगित कर रहा है?
(i) बड़े भाई साहब की ओर (ii) पक्षी की ओर
(iii) सूर्य की ओर (iv) पतंग की ओर

(ग) बाजार में लेखक की किससे मुठभेड़ हो गई?
(i) बड़े भाई साहब से (ii) अध्यापक से
(iii) पिताजी से (iv) एक मित्र से

(घ) 'अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो' यह कथन किसके लिए कहा गया है?
(i) बड़े भाई साहब के लिए
(ii) लेखक के लिए
(iii) लेखक के मित्र के लिए
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ङ) 'मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो' कथनानुसार लेखक के बड़े भाई साहब किस कक्षा में थे?
(i) नौवीं कक्षा में (ii) आठवीं कक्षा में
(iii) सातवीं कक्षा में (iv) दसवीं कक्षा में

5. मैं उनकी इस नई युक्ति से नतमस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आँखों से कहा-हरगिज नहीं। आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है। भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले-मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है, लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्त्तव्य भी तो मेरे सिर है।

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

(क) 'मैं उनकी इस नई युक्ति से नतमस्तक हो गया' लेखक यहाँ किस युक्ति की बात कर रहा है?
(i) बड़े भाई साहब द्वारा थप्पड़ मारने की बात कहने की
(ii) बड़े भाई साहब द्वारा अनुभव का महत्त्व बताने की
(iii) बड़े भाई साहब द्वारा पतंग के पीछे न भागने की
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) लेखक बड़े भाई साहब की किस बात से सहमति दिखाता है?
(i) बड़े और अधिक अनुभवी होने के कारण उन्हें लेखक से अधिक समझ है
(ii) उसे कनकौओं के पीछे नहीं भागना चाहिए
(iii) उसे इन आवारा लड़कों के साथ नहीं घूमना चाहिए
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) **बड़े भाई साहब का भी क्या दिल करता है?**
(i) कि मैं बहुत ज्यादा पढ़ूँ (ii) कि मैं पतंग उड़ाऊँ
(iii) कि मैं पास हो जाऊँ (iv) कि मैं बाहर खेलूँ

(घ) **लेखक के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?**
(i) आखिरकार उसका भाई उससे उम्र और अनुभव में कहीं अधिक ज्यादा था
(ii) बड़े भाई साहब इतना पढ़ने के बाद भी फेल हो जाते थे
(iii) वह समझ गया कि उसके उत्तीर्ण होने में बड़े भाई की ही प्रेरणा थी
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ङ) **अंत में बड़े भाई उचककर पतंग पकड़ते हैं। उनका ऐसा करना क्या सिद्ध करता है?**
(i) कि उनके मन में भी एक बच्चा छिपा हुआ है
(ii) कि बड़े भाई भी अब पतंग उड़ाना चाहते हैं
(iii) कि बड़े भाई अब गुस्से में पतंग फाड देंगे
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बड़े भाई साहब कॉपी-किताबों के हाशियों पर चित्र क्यों बनाया करते थे?
(क) पढ़ने से बचने के लिए
(ख) दिमाग को आराम देने के लिए
(ग) चित्रकारी को प्रमुखता देने के लिए
(घ) खेलकूद से लगाव होने के लिए

2. निम्न में से किस मामले में बड़े भाई साहब जल्दबाजी से काम लेना पसंद नहीं करते थे?
(क) खेलकूद में (ख) पढ़ाई में
(ग) भोजन करने में (घ) आराम करने में

3. लेखक को बड़े भाई साहब की बातें अच्छी क्यों नहीं लगती थीं?
(क) क्योंकि वह अव्वल दर्जे में पास हुआ था
(ख) क्योंकि भाई साहब फेल हो गए थे
(ग) क्योंकि भाई साहब उपदेश देते थे
(घ) क्योंकि भाई साहब स्वयं गलतियाँ करते थे

4. बड़े भाई साहब ने छोटे भाई पर रौब जमाने के लिए क्या किया?
(क) अपनी पढ़ाई-लिखाई के बारे में बताया
(ख) अपने अनुभवों व आयु का महत्त्व बताया
(ग) अध्यापकों के संघर्ष के बारे में बताया
(घ) अपनी जिम्मेदारियों का अहसास कराया

5. बड़े भाई साहब हर काम को साल में दो या तीन बार क्यों करते थे?
(क) क्योंकि वे आलसी थे
(ख) क्योंकि वे चीजों को गहराई से समझते थे
(ग) क्योंकि वे बुनियाद को मजबूत बनाना पसंद करते थे
(घ) क्योंकि ऐसा करना उन्हें अच्छा लगता था

6. बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को क्या सलाह देते थे?
(क) कक्षा में सदैव उपस्थित रहे
(ख) कमरे से बाहर न जाए
(ग) खेलकूद में समय न गँवाए
(घ) भोजन अच्छी तरह से खाएँ

7. बड़े भाई वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध क्यों हैं?
(क) खेलकूद पर जोर देती है
(ख) किताबी कीड़ा बनाती है और वास्तविकता से दूर है
(ग) बहुत लाभदायकता नहीं है
(घ) आदर्शवाद पर आधारित है

8. बड़े भाई साहब का छोटे भाई पर प्रभाव जमाना क्यों खत्म हो गया?
(क) छोटे भाई ने पढ़ना शुरू कर दिया
(ख) छोटा भाई कक्षा में प्रथम आया और बड़ा भाई फेल हो गया
(ग) छोटा भाई अपनी मनमानी करने लगा
(घ) छोटा भाई दूसरे कक्ष में रहने लगा

9. लेखक की हिम्मत कब टूट जाती थी?
(क) जब भाई साहब खेलने को कहते
(ख) जब भाई साहब पढ़ने को कहते
(ग) जब भाई साहब डाँटते
(घ) उपरोक्त सभी

10. लेखक को कौन-सा काम पहाड़ जैसा लगता था?
(क) खेलना-कूदना
(ख) खाना बनाना
(ग) पढ़ाई करना
(घ) दिन-रात भाई साहब के साथ घूमना

11. बड़े भाई साहब स्वभाव से कैसे थे?
(क) खेलने-कूदने वाले
(ख) आरामदायक जीवन जीने वाले
(ग) जल्दबाजी करने वाले
(घ) अध्ययनशील

12. लेखक की स्वयं के विषय में क्या धारणा बन गई थी?
(क) वह बिना पढ़े भी प्रथम आएगा
(ख) वह कक्षा में फेल ही होगा
(ग) वह अंग्रेजी कभी पढ़ नहीं पाएगा
(घ) वह बड़े भाई साहब की बराबरी कर पाएगा

13. पाठ 'बड़े भाई साहब' के आधार पर बताइए लेखक को कौन-सा नया शौक पैदा हो गया था?
(क) कंचे खेलने का (ख) किताब पढ़ने का
(ग) पतंग उड़ाने का (घ) ये सभी

14. दूसरी बार पास होने पर लेखक के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?
(क) लेखक की स्वच्छंदता बढ़ गई
(ख) लेखक को बड़े भाई पर दया आने लगी
(ग) लेखक दुविधाग्रस्त हो गया
(घ) लेखक का हृदय परिवर्तन हो गया

15. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?
(क) संघर्ष करने से (ख) अनुभव से
(ग) पढ़ने से (घ) उपरोक्त सभी

उत्तरमाला

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. क (iii), ख (iii), ग (ii), घ (iv), ङ (iii) *2.* क (iv), ख (i), ग (i), घ (iii), ङ (ii)
3. क (ii), ख (ii), ग (iii), घ (iii), ङ (i) *4.* क (i), ख (iv), ग (i), घ (ii), ङ (i) *5.* क (ii), ख (i), ग (ii), घ (iii), ङ (i)

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) *2.* (ख) *3.* (ग) *4.* (ख) *5.* (ग) *6.* (ग) *7.* (ख) *8.* (ख) *9.* (ग) *10.* (ग)
11. (घ) *12.* (क) *13.* (ग) *14.* (ख) *15.* (ख)